

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्री दुर्गा चालीसा



दोहा-श्री दुर्गा को ध्याय के, मात चरण चित लाय।

सकल जगत सुख पाए नर , भव बाधा मिट जाय ॥

दीन-हीन मोहि जानि के, किरपा करो भवानि।

मैं नित सुमिरौं आपको, दर्शन दीजो आनि ॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी । नमो नमो अम्बे दुःख हरनी ॥

निरंकार है ज्योति तुम्हारी । तिहूं लोक फैली उजियारी ॥

शशि ललाट मुख महा विशाला । नेत्र लाल भृकुटी विकराला ॥

रूप मातु को अधिक सुहावे । दरश करत जन अति सुख पावे ॥

तुम संसार शक्ति लय कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला । तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥

प्रलय काल सब नाशन हारी । तुम गौरी शिव शंकर प्यारी ॥

शिव योगी तुमरे गुण गावें । ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥

रूप सरस्वती को तुम धारा । दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥

धर्यो रूप नरसिंह को अम्बा । प्रगट भई फाड़ कर खम्बा ॥
रक्षा करि प्रहलाद बचायो । हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मी रूप धरा जग माहीं । श्री नारायण अंग समाही ॥
क्षीरसिंधु में करत विलासा । दया सिन्धु दीजै मन आसा ॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी । महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी धूमावति माता । भुवनेश्वरी बगला सुखदाता ॥
श्री भैरव तारा जग तारिणि । छिन्न भाल भव दुःख निवारिणि ॥
केहरी वाहन सोह भवानी । लांगुर वीर चलत अगवानी ॥
कर में खप्पर खड्ग विराजे । जाको देख काल डर भाजे ॥
सोहे अस्त्र और त्रिशूला । जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥
नगर कोटि में तुम्हीं विराजत । तिहूं लोक में डंका बाजत ॥
शुम्भ निशुम्भ को तुम मारे । रक्त बीज शंखन संहारे ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी । जेहि अध भार मही अकुलानी ॥
रूप कराल कालिका धारा । सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब । भई सहाय मातु तुम तब तब ॥
अमरपुरी अरु बासव लोका । तव महिमा सब रहे अशोका ॥
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी । तुम्हें सदा पूजें नर नारी ॥
प्रेम भक्ति से जो यश गावे । दुःख दारिद्र्य निकट नहि आवे ॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई । जन्म-मरण ताको छुटि जाई ॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी । योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥

शंकर आचारज तप कीनो । काम अरु क्रोध जीति सब लीनो ॥
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को । काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ॥
शक्ति रूप को मरम न पायो । शक्ति गई तब मन पछितायो ॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी । जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा । दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥
मोको मात कष्ट अति घेरो । तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ॥
आशा तृष्णा निपट सतावै । मोह मदादिक सब विनशावै ॥
शत्रु नाश कीजै महारानी । सुमिरों इकचित तुम्हें भवानी ॥
करो कृपा हे मात दयाला । ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला ॥
जब लगी जियौं दया फल पाऊं । तुम्हारो यश मैं सदा सुनाऊं ॥
दुर्गा चालीसा जो गावे । सब सुख भोग परमपद पावे ॥
देवीदास शरण निज जानी । करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥
दोहा- दुर्गा चालीसा पढ़े, भक्ति भाव मन लाए ।
अम्बिके कल्याण करें, दोष- विपत्ति टल जाए ॥
श्री दुर्गामाता की जय ॥